

नकली चाबी

रात के ठीक दो बजकर पैंतीस मिनट पर शहर के बाहरी इलाके में खड़े एक वीरान, अधबने कंक्रीट के ढांचे की सोलहवीं मंजिल पर एक टार्च की मद्धिम रोशनी चमकी। नीचे मुख्य द्वार पर लगे विशाल डिजिटल एलईडी बिलबोर्ड पर रंग-बिरंगी अक्षर जगमगा रहे थे 'ड्रीम वैली स्मार्ट होम्सः आपका स्वर्ग, आपकी चाबी! रेरा पंजीकृत एवं शत-प्रतिशत सुरक्षित।' तभी नीचे बैठे चौकीदार के मोबाइल पर मोशन-सेंसर का लाल अलर्ट बजा। स्क्रीन पर चेतावनी उभरी 'टावर नंबर सात की सोलहवीं मंजिल पर संदेहास्पद हरकत!' कंट्रोल रूम में सनसनी फैल गई। पिछले छह सालों से बंद पड़े इस भूतहा, बिना लिफ्ट और बिना प्लास्टर वाले कंक्रीट के जंगल में आधी रात को कौन चढ़ा था? क्या कोई लोहे के सरिए काटने वाला गिरोह घुसा था? या कोई अनहोनी होने वाली थी? सायरन बजाती हुई पुलिस की रात्रि गश्त वैन और चौकीदार टार्च चमकाते हुए अंधेरी, टूटी सीढ़ियों पर दौड़ पड़े। रोमांच और रहस्य हर कदम के साथ गहराता जा रहा था। जब दारोगा जी हांफते हुए सोलहवीं मंजिल के उस खुले, बिना रेलिंग वाले ढांचे पर पहुंचे, तो टार्च की रोशनी में जो दृश्य दिखा, उसने वर्दी की सारी सख्ती पिघला दी।

वहां न कोई चोर था, न कोई गिरोह

नंगी ईंटों के उस ठंडे फर्श पर चौंसठ साल के रिटायर्ड क्लर्क गोपाल बाबू अपनी बीमार पत्नी कमला को एक पुरानी प्लास्टिक की कुर्सी पर बैठाए खड़े थे। पास में ईंट के टुकड़ों के बीच एक छोटा सा मिट्टी का दीया टिमटिमा रहा था। दारोगा ने घबराकर पूछा, 'अरे बाबूजी! इस खंडहर में इतनी ठंड में आधी रात को क्या कर रहे हो? रेलिंग भी नहीं है, नीचे गिर जाओगे!' गोपाल बाबू ने अपनी सूखी, धंसी हुई आंखों से उस अधूरी दीवार की तरफ देखा। उनकी आवाज किसी गहरी खाई से निकलती हुई लगी। 'दारोगा जी... आज पूरे दस साल हो गए। कमला को आखिरी स्टेज का फेफड़ों का रोग है। डॉक्टर ने कह दिया है कि अब कुछ घंटों की मेहमान है। इसने दस साल से बस एक ही जिद पकड़ रखी थी कि मरने से पहले एक बार अपने पैसे से खरीदे हुए इस 1604 नंबर फ्लैट में दीया जलाना है... '

यार, तुमने कभी किसी सीधे-सादे आदमी को अपने ही खून-पसीने की कमाई से खरीदे गए खंडहर में गृह-प्रवेश करते देखा है? दस साल पहले गोपाल बाबू ने अपनी पूरी ग्रेच्युटी, पत्नी के गहने और बैंक से भारी कर्ज लेकर अड़तीस लाख रुपये इस 'स्मार्ट टाउनशिप' में लगाए थे। बिल्डर ने एचडी ब्रॉशर दिखाकर वादा किया था कि चौबीस महीने में चाबी हाथ में होगी। चौबीस महीने दस साल में बदल गए। बिल्डर ने पोर्टल पर इस कंपनी को 'दिवालिया' घोषित किया और अगले ही महीने शहर के दूसरे छोर पर पचास करोड़ का नया 'अल्ट्रा-लग्जरी प्रोजेक्ट' लॉन्च कर दिया। पिछले सात साल से गोपाल बाबू हर महीने 'डिजिटल रेरा ग्रीवेंस पोर्टल' पर शिकायत अपलोड करते रहे। हर बार सॉफ्टवेयर ने बड़ी शालीनता से एक ही ऑटोमेटेड जवाब भेजा 'आपका प्रकरण विचाराधीन है। अगली डिजिटल तारीख का इंतजार करें।' व्यवस्था की सबसे बड़ी चतुराई यही है। वह बिल्डर को नया साम्राज्य खड़ा करने का लाइसेंस चौबीस घंटे में दे देती है, और खरीदार के इंसाफ को दस साल तक 'वर्फरिंग' में अटकाए रखती है।

गोपाल बाबू की जेब में रखा पुराना फोन अचानक थरथराया

बैंक का ऑटो-डेबिट एसएमएस था 'मकान ऋण की मासिक ईएमआई 28,400 रुपये सफलतापूर्वक काटी गई। शेष किस्तेंः चौरासी।' नवंबर की बर्फीली हवा उस खुली छत के आर-पार बह रही थी। कमला का सिर अचानक कुर्सी पर एक तरफ ढुलक गया। उसकी सांसें रुक-रुककर चल रही थीं। गोपाल बाबू घुटनों के बल बैठ गए। उन्होंने अपनी कांपती जेब से एक चमचमाता हुआ पीतल का नकली चाबी का गुच्छा निकाला, जिसे वे बाजार से खरीदकर लाए थे ताकि कमला को लगे कि सचमुच घर मिल गया है।

उन्होंने उस ठंडी हथेली में वह गुच्छा थमाया

कमला ने आधी खुली, धुंधली आंखों से उन नंगी ईंटों की दीवारों को देखा। उसके सूखे होंठों पर एक बेजान सी मुस्कान उभरी 'सुनो... हमारा घर बहुत सुंदर है...' और अगले ही पल उसकी आंखें हमेशा के लिए बंद हो गईं। हाथ से वह चाबी का गुच्छा छूटकर कंक्रीट पर गिर पड़ा। ठीक उसी समय, नीचे मुख्य सड़क पर लगा वह विशाल डिजिटल बिलबोर्ड चमक उठा 'बधाई! हमारे शहर में प्रॉपर्टी बाजार ने तोड़े सारे रिकॉर्ड। आज ही बुक करें अपने सपनों का महल!' और सोलहवीं मंजिल के उस वीरान अंधेरे में, उस अधूरे कंक्रीट के बीच गोपाल बाबू अपनी मृत पत्नी की कुर्सी से लिपटकर इस कदर बिलख पड़े कि नीचे गुजरते ट्रैफिक का शोर भी उस लाचार बुजुर्ग की सिसकियों के आगे गूंगा नजर आने लगा।

लोकायुक्त की कार्रवाई के बाद भी राजस्व विभाग पर सवाल, भ्रष्टाचार को किसका संरक्षण

ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष सुरेंद्र श्याम सोनी ने लगाए गंभीर आरोप

मनासा। प्रदेश में राजस्व विभाग की कार्यप्रणाली एक बार फिर सवालों के घेरे में है। जमीन के दस्तावेजों में कथित छेड़छाड़, नामांतरण में अनियमितताओं और राजस्व रिकॉर्ड में हेराफेरी की शिकायतों के बीच लोकायुक्त की कार्रवाई ने विभाग की कार्यशैली पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।

इस मामले में मनासा ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष सुरेंद्र श्याम सोनी ने राजस्व विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ सत्ताधारी दल के जनप्रतिनिधियों की भूमिका पर भी सवाल उठाते हुए भ्रष्टाचार को राजनीतिक संरक्षण मिलने के आरोप लगाए हैं। सोनी ने आरोप लगाया कि राजस्व विभाग में कथित अनियमितताओं के बावजूद जिम्मेदार पटवारियों और अधिकारियों पर प्रभावी कार्रवाई नहीं हो रही है। उन्होंने पटवारी मुकेश कटारे, अनुराग पाटीदार, महेश भाटी, घनश्याम डांगी तथा तत्कालीन तहसीलदार मुकेश निगम की भूमिका को लेकर चार अलग-अलग जमीन संबंधी मामलों में जांच की मांग की। वहीं पटवारी जितेंद्र मराठा के विरुद्ध लोकायुक्त की कार्रवाई और गिरफ्तारी को उन्होंने राजस्व विभाग में व्याप्त कथित भ्रष्टाचार का गंभीर उदाहरण बताया। उनका सवाल है कि जब लोकायुक्त की कार्रवाई हो रही है, तो अन्य शिकायतों में अब तक ठोस कार्रवाई क्यों नजर नहीं आ रही?

भ्रष्टाचार के पीछे राजनीतिक संरक्षण की भी हो जांच

ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष ने आरोप लगाया कि राजस्व विभाग की कथित गड़बड़ियां केवल निचले स्तर के कर्मचारियों तक सीमित नहीं हो सकतीं। उन्होंने मांग की कि जिन सत्ताधारी नेताओं और जनप्रतिनिधियों पर संरक्षण देने के आरोप लग रहे हैं, उनकी भूमिका की भी निष्पक्ष जांच होनी चाहिए। केवल पटवारियों और कर्मचारियों पर कार्रवाई कर बड़े जिम्मेदारों को बचाना उचित नहीं होगा।

खिमला में आदिवासी जमीनों की अनुमतियां चंद दिनों में कैसे जारी हुईं

सोनी ने रामपुरा तहसील के खिमला क्षेत्र में ग्रीनको कंपनी के नाम पर आदिवासी किसानों की जमीनों की बिक्री अनुमतियों को लेकर भी सवाल उठाए। उन्होंने आरोप लगाया कि इन प्रकरणों में कलेक्टर कार्यालय से अनुमतियां बेहद कम समय में जारी की गईं। जबकि आम नागरिकों को जमीन संबंधी अनुमति और अन्य राजस्व कार्यों के लिए महीनों और वर्षों तक कार्यालयों के चक्कर लगाने पड़ते हैं। ऐसे में सवाल उठता है कि खिमला में आदिवासी किसानों की जमीनों की बिक्री संबंधी अनुमतियां आखिर चंद दिनों में कैसे जारी हो गईं? क्या इन प्रकरणों में सभी वैधानिक प्रावधानों और नियमों का पालन किया गया? कांग्रेस ने इन अनुमतियों से जुड़ी फाइलों, नोटशीट और स्वीकृति प्रक्रिया की कलेक्टर से निष्पक्ष जांच और जवाबदेही तय करने की मांग की।

जवाबदेही तय करने की मांग

सोनी ने जिला कलेक्टर से मांग की कि जमीन के दस्तावेजों में कथित छेड़छाड़, नामांतरण में अनियमितताओं और आदिवासी जमीनों की बिक्री अनुमतियों से जुड़े सभी मामलों की समयबद्ध जांच कराई जाए। जांच के दायरे में संबंधित पटवारियों, तत्कालीन तहसीलदारों, जिम्मेदार अधिकारियों और कथित राजनीतिक संरक्षण देने वालों को भी शामिल किया जाए। साथ ही अब तक लंबित शिकायतों और उन पर हुई कार्रवाई की स्थिति सार्वजनिक की जाए। उन्होंने कहा कि किसान की जमीन उसकी जीवनभर की कमाई और परिवार की सबसे बड़ी पूंजी होती है। यदि सरकारी रिकॉर्ड में ही हेराफेरी की शिकायतें सामने आएं और जिम्मेदारों पर कार्रवाई नहीं हो, तो आम किसान न्याय की उम्मीद किससे करे? सोनी ने चेतावनी दी कि प्रशासन ने यदि पारदर्शी जांच कर दोषियों के खिलाफ कार्रवाई नहीं की तो कांग्रेस किसानों और आदिवासी परिवारों के जमीन संबंधी अधिकारों की लड़ाई प्रदेश स्तर पर उठाएगी। अब मामला केवल एक-दो पटवारियों पर कार्रवाई तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि राजस्व विभाग की पूरी कार्यप्रणाली और जवाबदेही पर सवाल खड़े हो रहे हैं। बड़ा सवाल यह है कि लोकायुक्त की कार्रवाई के बाद भी यदि शिकायतों का निराकरण नहीं होता और कथित अनियमितताओं की निष्पक्ष जांच नहीं होती, तो किसानों और आदिवासियों की जमीनों की सुरक्षा की जिम्मेदारी आखिर कौन निभाएगा।

गुडभेली के पास यात्री बस और बाइक में आमने-सामने जोरदार भिड़ंत, दो घायल, एक की हालत गंभीर





पिपलिया स्टेशन (निप्र)। पिपलियामंडी-मनासा मार्ग पर गुडभेली गांव में मुंदड़ी टर्न पर रविवार दोपहर करीब 3:20 बजे यात्री बस और मोटरसाइकिल के बीच भिड़ंत हो गई। दुर्घटना में मोटरसाइकिल सवार दो लोग घायल हो गए। इनमें एक की हालत गंभीर होने पर प्राथमिक उपचार के बाद मंदसौर जिला अस्पताल रेफर किया गया। हादसे के बाद बस अनियंत्रित होकर सड़क से नीचे उतर गई और नाले को तोड़ते हुए उसमें जा घुसी। दुर्घटना के बाद घटनास्थल पर अफरा-तफरी मच गई तथा आसपास के ग्रामीणों और राहगीरों की भीड़ जमा हो गई। जानकारी के अनुसार जावरा से मनासा के बीच संचालित रहमत यात्री बस क्रमांक एमपी 04 जीपी 2405 रविवार दोपहर मनासा की ओर जा रही थी। इसी दौरान पिपलिया मंडी-मनासा मार्ग पर मुंदड़ी टर्न के समीप गुडभेली के पास बस की मोटरसाइकिल से जोरदार भिड़ंत हो गई। मोटरसाइकिल पर सुंदरलाल पिता मांगीलाल राठौर और दिनेश पिता कन्हैयालाल वर्मा, दोनों निवासी गुडभेली सवार थे। टक्कर इतनी जोरदार थी कि दोनों बाइक सवार सड़क पर गिरकर घायल हो गए। हादसे में सुंदरलाल राठौर को गंभीर चोटें आईं, जबकि दिनेश वर्मा भी घायल हो गए। दुर्घटना की जानकारी मिलते ही स्थानीय लोग मौके पर पहुंचे और घायलों को उपचार के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पिपलियामंडी पहुंचाया। यहां चिकित्सकों ने दोनों का प्राथमिक उपचार किया। सुंदरलाल की हालत गंभीर होने के चलते उन्हें बेहतर उपचार के लिए जिला अस्पताल मंदसौर रेफर कर दिया गया, जबकि दिनेश वर्मा का भी उपचार किया गया। बताया जा रहा है कि मोटरसाइकिल सवारों को बचाने के प्रयास में बस चालक का संतुलन बिगड़ गया, जिससे बस सड़क से नीचे उतरकर नाले में जा घुसी। बस ने नाले की संरचना को भी क्षतिग्रस्त कर दिया। गनीमत रही कि बस में सवार किसी भी यात्री को चोट नहीं आई, अन्यथा हादसा और गंभीर हो सकता था। दुर्घटना के बाद बस में सवार यात्रियों में भी घबराहट का माहौल रहा। बाद में यात्रियों को दूसरी बस की व्यवस्था कर उनके गंतव्य के लिए रवाना किया गया। बस सड़क से नीचे नाले में फंस जाने के कारण उसे बाहर निकालने में काफी मशक्कत करनी पड़ी। देर शाम जेसीबी मशीन की मदद से बस को बाहर निकाला गया। दुर्घटना के चलते मौके पर काफी देर तक लोगों की आवाजाही और भीड़ बनी रही। पुलिस जांच कर रही है।

बेटे की शादी की पत्रिकाएं बांटने जा रहे पिता की नीलगाय की टक्कर से मौत, घर में पसरा मातम

पिपलिया स्टेशन (निप्र)। घोड़ारोज (नीलगाय) के कारण सड़क दुर्घटनाओं का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है। आए दिन हो रहे हादसों में लोग घायल हो रहे हैं, वहीं कई लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ रही है। ऐसा ही दर्दनाक हादसा मल्हारगढ़ थाना क्षेत्र के बरखेड़ादेव निवासी मुकेश पाटीदार के साथ हुआ। बेटे गोधन की शादी की पत्रिकाएं बांटने जा रहे मुकेश की मोटरसाइकिल के सामने अचानक नीलगाय आ गई, जिससे वे गंभीर घायल हो गए। उदयपुर के अस्पताल में उपचार के दौरान शनिवार को उनकी मौत हो गई। इस घटना से परिवार की खुशियां मातम में बदल गईं। जानकारी के अनुसार बरखेड़ादेव निवासी मुकेश (47) पिता मोतीलाल पाटीदार के पुत्र गोधन की शादी 25 नवंबर को होना तय हुई थी। विवाह की पत्रिकाएं समाजजनों और रिश्तेदारों को बांटने के लिए मुकेश 17 नवंबर को मोटरसाइकिल से बरखेड़ादेव से डबोक (उदयपुर) जा रहे थे। इसी दौरान रास्ते में अचानक उनकी बाइक के सामने घोड़ारोज आ गया। टक्कर में मुकेश गंभीर रूप से घायल हो गए।



तुकईथड मंडी में 171 युवाओं ने किया रक्तदान, आदिवासी अंचल में रक्त की कमी दूर करने की पहल

नेपानगर। तुकईथड कृषि उपज मंडी में रविवार को रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। शिविर में 171 युवाओं ने रक्तदान कर जरूरतमंद मरीजों के लिए अपना योगदान दिया। भाजपा जिला किसान मोर्चा अध्यक्ष राहुल जाधव के तत्वावधान में आयोजित इस पहल का उद्देश्य क्षेत्र में रक्त की उपलब्धता बढ़ाने और लोगों को रक्तदान के प्रति जागरूक करना रहा।

आदिवासी क्षेत्र में रक्त की उपलब्धता बड़ी जरूरत

तुकईथड सहित आसपास का क्षेत्र आदिवासी बहुल है। यहां स्वास्थ्य सुविधाओं और जरूरत के समय रक्त की उपलब्धता का सवाल महत्वपूर्ण रहता है। जिला शासकीय अस्पताल में भी ब्लड ग्रुपिंट की कमी की स्थिति को देखते हुए रक्तदान की आवश्यकता महसूस की जा रही है। ऐसे में युवाओं की इस भागीदारी को जरूरतमंद मरीजों के लिए उपयोगी पहल के रूप में देखा जा रहा है।

जनप्रतिनिधियों ने युवाओं का बढ़ाया उत्साहः

शिविर में भाजपा जिला अध्यक्ष डॉ. मनोज माने, जिला पंचायत अध्यक्ष गंगाराम माकों, पूर्व विधायक सुमित्रा देवी कास्डेकर सहित जनप्रतिनिधि और युवा मौजूद रहे। सभी ने रक्तदान के महत्व पर जोर देते हुए युवाओं को सामाजिक कार्यों में आगे आने के लिए प्रेरित किया।

रक्तदान से जीवन बचाने की अपील

राहुल जाधव ने युवाओं से अपील की कि रक्तदान को केवल आयोजन तक सीमित न रखें, बल्कि जरूरतमंदों की मदद के लिए इसे सामाजिक जिम्मेदारी के रूप में अपनाएं। उन्होंने संदेश दिया– 'रक्तदान दें, जीवनदान दें।' शिविर में युवाओं की भागीदारी ने यह संदेश दिया कि सामूहिक प्रयास से जरूरतमंद मरीजों के लिए रक्त की उपलब्धता बढ़ाने में मदद मिल सकती है।

नावरा के जंगलों में कटाई से लेकर थाने पर हमले तक का इतिहास, वन सुरक्षा के सामने अब भी बड़ी चुनौती

19 वनखंडों में पेड़ों की कटाई से करोड़ों रुपये के नुकसान का अनुमान, बाकड़ी चौकी से हथियार लूट और नेपानगर थाने पर हमले तक पहुंचे थे घटनाक्रम; अब वन सुरक्षा पखवाड़े में निगरानी और जंगलों की रिकवरी पर जोर

नेपानगर/नावरा : नेपानगर और नावरा के जंगलों में वन सुरक्षा की चुनौती केवल अवैध कटाई तक सीमित नहीं रही। पिछले वर्षों में यहां वनभूमि पर कब्जे, वनकर्मियों पर हमले, हथियार लूट और अतिक्रमण हटाने के दौरान टकराव जैसी घटनाएं सामने आईं।



अक्टूबर 2022 से मार्च 2023 के बीच नावरा रेंज के 19 वनखंडों में पेड़ों की अवैध कटाई से करीब 30 करोड़ रुपये के नुकसान का अनुमान वन विभाग के सर्वे के हवाले से सामने आया था। इस घटनाक्रम ने क्षेत्र के वनक्षेत्र को हुए नुकसान और उसकी सुरक्षा व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े किए थे।

बाकड़ी चौकी से लूटी गई थीं 17 राइफलें

नवंबर 2022 में नावरा वन क्षेत्र की बाकड़ी चौकी पर हमला कर वन अमले की 17 सरकारी राइफलें और कारतूस लूट लिए गए थे। घटना के बाद पुलिस ने तलाशी अभियान चलाकर सभी 17 राइफलें बरामद कर ली थीं। यह घटना वन क्षेत्र में सक्रिय अतिक्रमण और अवैध कटाई से जुड़े संघर्ष की गंभीरता को सामने लाने वाली थी।

वन कार्रवाई के बीच नेपानगर थाने पर हमला

अप्रैल 2023 में नेपानगर थाने पर भीड़ ने हमला कर लॉकअप में बंद तीन आरोपियों को छुड़ा लिया था। इनमें बाकड़ी वन चौकी से हथियार लूटने के मामले का आरोपी हेमा मेघवाल भी शामिल था। हमले में पुलिसकर्मी घायल हुए और थाने में तोड़फोड़ भी हुई। इसके बाद पुलिस और प्रशासन ने वनभूमि से अतिक्रमण हटाने की व्यापक कार्रवाई शुरू की। उस दौरान करीब 950 झोपड़ियां और मकान हटाए जाने की खबर प्रकाशित हुई थी।

मुक्त कराई जमीन पर हरियाली लौटाने का प्रयास

अतिक्रमण हटाने के बाद वन विभाग के सामने खाली कराई गई जमीन को फिर से जंगल के रूप में विकसित करने की चुनौती थी। अगस्त 2026 की एक रिपोर्ट के अनुसार, नावरा रेंज में दो हजार हेक्टेयर से अधिक प्रभावित वनक्षेत्र में बीज और रूटशूट रोपण के जरिए हरियाली लौटाने का प्रयास किया गया। रिपोर्ट में क्षेत्र के फिर हरा-भरा होने का उल्लेख है, हालांकि लगाए गए पौधों को पूर्ण वृक्ष बनने में अभी कई साल लगेंगे।

नई घुसपैठ की कोशिशें अब भी चुनौती

जून 2026 में नावरा रेंज की डेहरिया बीट के कक्ष क्रमांक 260 में 40 एकड़ से अधिक वनभूमि पर खेती की तैयारी मिलने के बाद विभाग ने अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई की थी। वहीं अप्रैल 2026 में झांझर क्षेत्र में अतिक्रमण हटाने पहुंची संयुक्त टीम को पथराव का सामना करना पड़ा था। ये घटनाएं बताती हैं कि पहले की बड़ी कार्रवाइयों के बाद भी वनभूमि की नियमित निगरानी और नए कब्जों को रोकना जरूरी बना हुआ है।

वन सुरक्षा पखवाड़े की असली कसौटी

12 से 24 नवंबर तक चल रहे वन सुरक्षा पखवाड़े में वनकर्मी दिन-रात गश्त कर रहे हैं। अभियान का उद्देश्य अवैध कटाई, वन्यजीव शिकार और वनभूमि पर अतिक्रमण रोकना है। लेकिन इस मुहिम का प्रभाव केवल पखवाड़े तक सीमित नहीं रहना चाहिए। पहले मुक्त कराई गई जमीन की सुरक्षा, पुनर्वनीकरण की स्थिति और नए अतिक्रमण की रोकथाम की नियमित समीक्षा भी जरूरी है।

अब निगरानी के साथ जवाबदेही भी

वन विभाग के सामने अब दोहरी जिम्मेदारी है–एक ओर पहले प्रभावित जंगलों को फिर से विकसित करना और दूसरी ओर नई कटाई तथा अतिक्रमण की कोशिशों को शुरुआती स्तर पर रोकना। मुक्त कराए गए वनक्षेत्रों में जमीन पर हरियाली लौट चुकी है, पौधे जीवित हैं और संवेदनशील वनखंडों में अब भी विशेष निगरानी जारी है।

रोड़वेज में कंडक्टर रहे रघुवंशी की पत्नि लता का स्वर्गवास

खरगोन निप्र। रघुवंशी समाज के सामाजिक कार्यकर्ता एवं मप्र रोड़वेज में कंडक्टर रहे ओमप्रकाश रघुवंशी की पत्नि 60 वर्षीय लता रघुवंशी का रविवार को हृदयाघात से आकस्मिक निधन हो गया। श्रीमती लता शहर के प्रतिष्ठित सीए अनिल रघुवंशी की काकीजी थी। श्रीमती रघुवंशी के आकस्मिक निधन से समाचार सहित परिवार में शोक की लहर व्याप्त है।



उल्लेखनीय है श्रीमती लता ने शहर के वरिष्ठ पत्रकार एवं सामाजिक कार्यकर्ता अजीजुद्दीन शेख को भाई बनाया था। हाल ही में भाई दूज पर उन्होंने श्री शेख दंपति को दूज पर अपने घर आमंत्रित भी किया था। निधन का समाचार मिलते ही शेख एवं उनकी पत्नि सायरा रघुवंशी निवास पर पहुंचे। उनके निधन पर भाई अजीज ने अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि बहन लता से पिछले 40 साल से प्रतिवर्ष रक्षाबंधन पर राखी बंधवाते थे। भाई दूज सहित हर त्यौहार एवं दोनों परिवार में होने वाले सुख-दुख के कार्यक्रमों में शरीक होते थे। भाई दूज पर उन्होंने मुझे और मेरी पत्नि सायरा को भोजन पर बुलाया और खुद अपने हाथों से भोजन कराया था। उस समय ऐसा महसूस ही नही हुआ कि वे कुछ ही दिन में चल बसेगी। उनकी कमी परिवार में हमेशा खलेगी। श्रीमती रघुवंशी की अंतिम यात्रा निज निवास से दोपहर में निकाली गई। अंतिम संस्कार शाम 5 बजे पहाड़सिंगपुरा स्थित मुक्तिधाम पर किया गया। अंतिम यात्रा में अजीजुद्दीन शेख, सीए अनिल रघुवंशी एवं पूर्व पार्षद विक्रम रघुवंशी सहित बड़ी संख्या में समाजजन शामिल हुए।